तृतीय अध्याय

" विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण "

-: तृतीय अध्याय :-

" विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण "

कहानी का वर्गीकरण विभिन्न प्रकारों से किया जाता है | उसमें एकमत का अभाव दिखाई देता है | इन वर्गीकरणों में तालमेल नही दिखाई देता | कहानियों के विषय भी बृहत् मात्रा में अभिव्यंजित होते हुए दिखाई देते हैं | कहानी वर्गीकरण के विविध आधार दिखाई देते हैं | इस संदर्भ में ' डॉ.देशराज सिंह भाटी ' ने लिखा है, " विषयवस्तु के आधार पर कहानियों को आठ वर्गों में विभक्त किया गया है | 1. घटनाप्रधान 2. पात्रप्रधान 3. भावप्रधान 4. विचारप्रधान 5. कल्पनाप्रधान 6. हास्यप्रधान 7. काव्यात्मक और 8.प्रतीकात्मक |

प्रतिपादन शैली के आधार पर कहानियों के प्रमुख पाँच वर्ग बनाये गए हैं; 1. उत्तम पुरूष प्रधान 2. अन्य पुरूष प्रधान 3. पत्र - पद्धति में लिखित 4. वार्तालाप पद्धति में लिखित और 5. डायरी पद्धति में लिखित |

विषय के आधार पर कहानियों को कुछ अन्य प्रमुख वर्गों में भी रखा गया है; जैसे धार्मिक कहानियाँ, राजनीतिक कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, वैज्ञानिक कहानियाँ, सामाजिक कहानियाँ आदि |

रचना - लक्ष्य के आधार पर कहानी के तीन वर्ग स्थिर किए गए हैं - 1. आदर्शवादी 2. यथार्थवादी 3. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी |

स्वरूप - विकास के आधार पर कहानियों के चार भेद स्वीकार किये गए हैं - 1. निर्माण - कालीन, 2. प्रयोग - कालीन, 3. विकास - कालीन और 4. समुन्नति (उत्कर्ष) कालीन | किंतु ये सारे विभाजन आत्यन्तिक नहीं कहे जा सकते, केवल अकादमिक दायित्वों का निर्वाह ही माने जा सकते हैं | " [1] अर्थात् उपर विवेचित आधारों की सीमा में वर्गीकरण करें यह बात अनिवार्य नहीं | वर्गीकरणों के विविध आधार कहानियों के विषय के अनुसार बनाये जा सकते हैं |

' हंस ' पत्रिका में ' वर्ष 2005 ' की प्रकाशित कहानियों में विषयों की विविधता, अनछुए विषयों का प्रस्फुटन करना; यह बातें विशेष रुप से नज़र आती हैं | अत: विवेच्य कहानियों के विषय

का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहानियों का वर्गीकरण करना विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा | अतः विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण अध्ययन की सुविधा के लिए विषय के आधार पर किया गया हैं | यह वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से हैं -

1. राजनीतिक विषय से संबंधित कहानियाँ |
2. सामाजिक विषय से संबंधित कहानियाँ |
3. धार्मिक विषय से संबंधित कहानियाँ |
4. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ |
5. ऐतिहासिक कहानियाँ |
6. आर्थिक जीवन से संबंधित कहानियाँ |

3.1 **राजनीतिक विषय से संबंधित कहानियाँ** :-

राजनेताओं का प्रमुख लक्ष्य राजगद्दी अर्थात् कुर्सी पाना यह होता है | राजगद्दी पाने के लिए कई बार राजनेता दाँव - पेंच रचते हैं | इन राजनीतिक दाँव - पेचों के संदर्भ में ' डॉ.शशी जेकब ' ने लिखा है, " दाँव - पेंच राजनीति का अस्त्र है | ये कुश्ती के दाँव पेचों से ज्यादा खतरनाक, बेरहम और हिंसात्मक हैं ... राजनीति की राजशक्तियाँ स्वार्थलोलुप होती जा रही हैं, जहाँ स्वार्थ के अलावा दूसरा कुछ नहीं है | " [2] अर्थात् राजनीति में स्वार्थ के आगे उचित - अनुचित का विचार न करते हुए हिंसा का वातावरण भी निर्माण किया जा सकता है | जो ' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में दृष्टव्य है |

' हंस , फरवरी,2005 में प्रकाशित ' रामधारी सिंह दिवाकर ' द्वारा लिखित ' पब्लिक ' कहानी के राजनेता ' बैताल सिंह ' और ' डायमंड ' राजगद्दी अर्थात् कुर्सी पाने के पश्चात् स्वार्थी वृत्ति को दर्शाते हुए ' भुदनियां जमीन मामले ' को लेकर अपने साथियों द्वारा जोतदारों पर गोलियाँ चलाते हैं | स्वयं ही जोतदारों के मृतकों को सहायता निधि प्राप्त हो इसलिए ' विधानसभा ' में हंगामा खड़ा करते हैं | मीड़िया का सहारा लेते हुए अपनी अच्छी प्रतिमा जनमानस में निर्माण करने का प्रयास करते हैं | अपना स्थान मजबूत बने इसलिए कोशिश करते हैं | इस प्रकार राजनीतिक दाँव - पेंच

रचनेवाले अवसरवादी राजनेताओं की ' कथनी और करनी ' में अंतर होता है; इस बात का चित्रण विवेच्य कहानी में दृष्टव्य है |

' हंस ', अप्रैल,2005 में ' नीलिमा सिन्हा ' द्वारा लिखित ' तैंतीस परसेंट ' कहानी प्रकाशित है | यह महिलाओं को प्राप्त होनेवाले ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण के मुद्दे पर आधारित है | ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण का मुद्दा कुछ पक्षों के इस बात पर विरोध करने एवं चुप्पी बनाये रखने के कारण अनिर्णय के कगार पर खड़ा हुआ है | प्रस्तुत कहानी ' तैंतीस परसेंट ' का आरक्षण राजनीति में प्राप्त होने से अधिक संख्या में महिलाएँ राजनीतिक अधिकार को ग्रहण कर सकेगी इसका प्रतिबिंब दर्शानेवाली है | प्रस्तुत आरक्षण के तहत् चुनाव में महिलाएँ खड़ी होकर, जीत के द्वारा सत्ता प्राप्त कर अधिकार पा सकेगी इस पक्ष का चित्रण विवेच्य कहानी में किया है | ये महिलाएँ अपने पति के पहुँच के बलबूते पर, दलित वर्ग के आरक्षण, पार्टी की पुरानी कार्यकर्ता के रूप में चुनाव जीत कर अपने - अपने प्रदेश की जिला अध्यक्ष बनी हैं, इनका चित्रण स्वाभाविकता से प्रस्तुत कहानी में प्रतिपादित किया है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में राजनीति के दाँव - पेंच, राजनेताओं के दोष, संसद द्वारा पारित ' तैंतीस परसेंट ' महिलाओं को प्राप्त होनेवाले आरक्षण; आदि राजनीति से संबंधित विषयों को प्रकट किया हैं |

3.2 **सामाजिक जीवन से संबंधित कहानियाँ** :-

मानव समाज प्रिय प्राणी है | अतः समाज में रहते हुए वह अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करता है, इसलिए उसे दूसरे लोगों की सहायता प्राप्त होती है | अपनी रोजमर्रा जरूरतों को वह समाज में रहकर ही प्राप्त करता है | समाज में रह कर ही उसे उचित - अनूचित बातें, मालूम होती है | दया, परोपकार, त्याग, कर्तव्य, निष्ठा, सद्व्यवहार आदि गुणों का; नैतिक मूल्यों का अध्ययन वह दूसरों के अनुभव या शिक्षा के सहारे समाज में ही रह कर सीखता है | समाज में इस शिक्षा के आधार पर अपना वजूद निर्माण करता है | समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझ कर सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेकर अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं | इस प्रकार समाज और व्यक्ति का अनन्य साधारण संबंध है |

व्यक्ति के बिना समाज और समाज के बिना व्यक्ति अधूरा है; एक - दूसरे के सिवा इनकी कल्पना असंभव सी प्रतीत होती है |

' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में सामाजिक जीवन से संबंधित कहानियाँ लिखी गई हैं | अध्ययन की सुविधा के लिए इसे निम्नलिखित प्रकार से विभाजित किया हैं |

सामाजिक जीवन से संबंधित कहानियाँ |

ग्राम जीवन | नागर जीवन | महानगरीय जीवन | विदेशी समाज जीवन

उपर विवेचित वर्गों के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया हैं |

3.2.1 **ग्राम जीवन** :-

देश की आत्मा ' ग्राम ' है | गाँवों में ही किसान अपनी दुनिया बसाते हैं | हमारे देश का नारा है, " जय जवान, जय किसान |" सीमा पर तैनात रह कर जवान देश की सुरक्षा का भार अपने कंधों पर लेते हैं | दुश्मन की गतिविधियों पर अपनी नज़र रखते हैं | अपनी जान धोखे में ड़ालते हैं, पर देश की आन, बान और शान पर आँच नहीं आने देते | उसी तरह गाँवों में बसे किसान अपने खेतों में फसल तैयार करते हैं | वह अन्नदाता हैं | उनके ही द्वारा निर्माण किये गए अनाज पर लोग अपना भरन - पोषण करते हैं | गाँवों में ही अधिकतर एकता, आचार - विचार, रहन - सहन, त्यौहार आदि संस्कृतिमूलक बातों का पोषण एवं संवर्धन होता रहता हैं |

'वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में ग्रामीण जनता के जीवन संबंधी विविध पहलुओं का चित्रण दिखाई देता है | अतः विवेच्य कहानियों में चित्रित ग्रामीण जीवन निम्नलिखित प्रकार से हैं |

1. ग्रामीण जीवन का आधार - लोककला |

ग्रामों में मनोरंजन के साधन कम होते हैं | यहाँ की जनता गरीब हैं | गरीब किसान, मजदूर दो वक्त की रोटी बहुत मुश्किलों से खा सकते हैं | इन मजदूरों को गाँव के जमींदार या पूँजीपति लोग अपने खेत में काम करने पर बहुत ही कम मजदूरी देते हैं | हालाँकि इसका कारण है उनका अशिक्षित होना | हर समय सिर्फ काम ही काम करने और घर की जरूरतों का जुगाड़ करते हुए इनके शरीर के साथ इनका मन भी थक जाता है | तो इन्हें मनोरंजन की आवश्यकता निर्माण होती है |

गाँव के कुछ लोग अपना गृहस्थ जीवन सुचारू रूप से चलाने के लिए लोककला का प्रदर्शन करके लोगों का मनोरंजन करते हैं | साथ ही गाँव के लोगों द्वारा बक्षीस के रूप में अनाज या पैसे पाते हैं | गाँव के लोगों को भी मनोरंजन का यह सस्ता साधन बहुत प्रिय होता है | वे अपने पूरे परिवार के समेत लोककला का आस्वाद लेते हैं | अतः कहा जा सकता है लोककला - ग्रामीण जीवन का आधार है | लोककला संस्कृति का अंग है, अतः समाज में इसे अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त है | लोककलाओं का संवर्धन एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी करती रहती हैं, जिससे यह हमेशा जीवंत रहती हैं |

हंस, नवंबर,2005 में प्रकाशित ' हरिपाल त्यागी ' द्वारा लिखित ' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' कहानी का ' कल्लू गिर ' लोककला के सहारे अपना जीवन यापन करता रहता हैं | वह गुसाई है | उसके समाज के लोग उनका पुश्तैनी काम भीख़ माँगकर अपना पेट पालते रहते हैं | पर स्वाभिमानी ' कल्लू ' को यह बात अच्छी नहीं लगती | हारमुनियम बजाते हुए गाना गाने की कला में वह प्रवीण है | वह गाना गाते समय बादशाह का चोगा पहन कर अभिनय करता हुआ अपनी कला गाँववालों के सामने पेश करता है | उस कला को देखकर गाँववाले पुरूष, स्त्री, बूढ़े, बच्चे सभी व्यक्ति मंत्रमुग्ध होते हैं | इस तरह गाँव में रह कर गुसाई कल्लू अपनी लोककला को जीवन का आधार बनाकर खुशी से अपना जीवन यापन करता रहता हैं | यह ग्रामीण जीवन का एक चित्र लेखक ने पाठकों के सामने चित्रित किया है |

2. **नक्सलवादी जीवन** :-

जोतदारों पर गाँव के अमीर पूँजीपति वर्ग के लोग अन्याय करते रहते हैं | जोतदार अपना काम पूरी निष्ठा से करते हैं अतः उन पर होता हुआ अन्याय देखकर सरकार ने सरकारी जमीन जोतदारों को दी | लेकिन कुछ दिनों बाद उस जमीन पर हक़ दिखाते हुए जमींदारों ने जोतदार किसानों से जमीन हथियाने की कोशिश की | ये जमीन सरकारी हैं अतः उस पर अपना पूरा हक़ है यह समझ कर कुछ किसानों ने जमींदारों और उनके भ्रष्ट अधिकारियों को सबक सिखाने के लिए और स्वयं को न्याय प्राप्त हो इसलिए हाथ में बंदूक लेकर सशस्त्र क्रांति का रास्ता चुन लिया | समाज ऐसे लोगों को ' नक्सलवादी ' कहता है | ये लोग कानून का साथ नहीं लेते इसलिए पुलिस भी इनके पीछे हाथ धोकर पड़ी हैं | फिर भी नक्सलवादियों के इरादे बुलंद ही दिखाई देते हैं |

उपर विवेचित पक्ष का चित्रण ' हंस ' जून, 2005 में प्रकाशित ' सोहन शर्मा ' द्वारा लिखित ' समरवंशी ' कहानी में हुआ है | नक्सलवादी अपने कार्यक्षेत्र के लिए पहाड़ों में बसी बस्ती का सहारा लेते हैं | जिससे इन्हें पुलिस की और गाँव में बसे पूँजीपति वर्गों की गतिविधियों पर नज़र रखना आसान हो | प्रस्तुत कहानी में नक्सलवादी जीवन का चित्रण प्रस्तुत करते समय कहानीकार ' सोहन शर्मा ' ने लिखा है, " सवाल अपने देश की विशेषताओं को अपने सामाजिक - राजनीतिक ढ़ाँचे की असलियत को समझकर उसके अनुरूप रणनीति बनाने का है ... अन्याय और अत्याचार को ख़त्म करने के लिए हथियार तो उठाने ही पड़े हैं. हर दौर में यही हुआ है |" [3] अर्थात् शोषक पूँजीवादी समाज व्यवस्था को समाप्त करने के लिए शोषितों द्वारा हथियार उठाना अनिवार्य है और वही क्रिया करके नक्सलवादी कुछ बुरा आचरण या समाज विघातक कृति नहीं कर रहे हैं, ऐसी उनकी धारणा है यह विवेच्य उद्धरण से पता चलता है |

इस प्रकार नक्सलवादी जीवन ख़तरे से भरा, शोषकों के प्रति विद्रोही भावना से निर्माण हुआ दिखाई देता है |

3. **ग्रामों में छात्र जीवन** :-

ग्रामों में अधिकतर गरीब किसान या मजदूर रहते हैं | वे अपने बच्चों को स्कूल भेजते हैं | अब ' सर्व शिक्षा अभियान ' के तहत् सभी बच्चों को शिक्षा का अवसर प्राप्त हुआ है | जिससे दो वक्त की रोटी को पाने के लिए संघर्ष करनेवाले मजदूर अपने बच्चों को काम पर भेजने के बजाय स्कूल भेजने के लिए प्रेरित होते हैं | उनकी यह तमन्ना होती हैं कि, उनके जैसा श्रमपूर्ण जीवन उनके बच्चों को न जीना पड़े | बच्चे शिक्षित होकर शिक्षा के बलबूते पर अच्छा जीवन जिये | उनकी जिंदगी सँवर जाये और वे अपने माँ - बाप की वृद्‌धावस्था का सहारा बने |

पाठशाला में पढ़नेवाले छात्रों का जीवन आनंदित होता हैं | पाठशाला में अमीर, जमींदार के बच्चे या किसान या मजदूरों के बच्चों में कोई भेद नहीं किया जाता | सभी छात्र पाठशाला में एक छत के नीचे अध्यापकों के अनुशासन में पढ़ाई द्‌वारा विविध नीति - मूल्यों को सिखते हैं | छात्रों के मन में दूसरों के अलग पोशाक देखकर ईर्ष्या या गरीबी का भाव न पनपे इसलिए पाठशाला में सभी बच्चों का गणवेश, पोशाक एक जैसा ही होता है | हर व्यक्ति के जीवन में अपना छात्र जीवन एक अलग महत्त्व रखता है |

' हंस ', अक्तूबर, 2005 में प्रकाशित ' रोशन प्रेमयोगी ' द्‌वारा लिखित ' बुध्दू ' कहानी में पाठशाला का वातावरण चित्रित किया है | विवेच्य कहानी में कक्षा आठ ' ए ' के छात्र ' बुध्दू ' इस छात्र के साथ उपेक्षितों सा व्यवहार करते हैं | उससे बातें नहीं करते | इसका कारण यह है कि, वह गाँव में रहनेवाले एक गरीब किसान का पोता है | ' बुध्दू ' के पास एक ही कमीज है, अतः वह बार-बार एक ही कपड़े पहनकर स्कूल आता है, जो गंदे होते हैं | उसके बाल भी बड़े हैं | उनमें तेल न लगाने के कारण वह बिखरे - बिखरे लगते हैं | हालाँकि वह मेधावी है, जो कक्षा में प्रथम क्रमांक पाता है | कुछ दिनों बाद अमीर घर की बेटी ' स्मृति ' ' बुध्दू ' की दोस्त बनती है | वह अपने मित्र को साफ - सुथरे कपड़े पहनने की सलाह देती है | स्मृति अमीर घर की बेटी है पर कक्षा में वह ' बुध्दू ' के साथ अच्छा व्यवहार करती है | कक्षा के ' सुजान गुरूजी ' ' बुध्दू ' की क्लास को समझाते हैं कि ' बुध्दू ' बहुत ' बुद्‌धिमान ' है; सब छात्रों को एक - दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए | इस बात को समझ

कर सभी छात्र उपेक्षित ' बुध्दू ' के साथ दोस्ती करते हैं | इस तरह ग्रामीण छात्रों के जीवन का दर्शन विवेच्य कहानी में होता है |

3.2.2 **नागर जीवन** :-

गाँव के लोग नौकरी, शिक्षा, व्यवसाय आदि विविध कारणों से नगरों की ओर आते हैं | औद्योगिकरण की वजह से नगरों में विपुल मात्रा में रोजगार के साधन उपलब्ध होते हैं | अतः लोग नौकरी के बहाने नगर में ही अपना घर बनाते हैं और यही बसते हैं | नगरों में इनका जीवन सुचारू रूप से शुरू होता है और यहाँ एक अलग नगरीय संस्कृति उसके रीति - रिवाज, रहन - सहन, आचार पद्धति का आरंभ होता है | नगरों में विविध स्थानों और परिवेश से आये लोग रहते हैं, अतः इनकी विचारधारा अलग होती हैं | इनका जीवन अपने आप तक ही सीमित होता है |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में ' नागर जीवन ' का चित्रण निम्नलिखित प्रकार से हैं |

1. **नागरी नारी जीवन** :-

नारी को अपने जीवन में अनेक भुमिकाएँ निभानी पड़ती हैं | वह बेटी, बहू, पत्नी, बहन, देवरानी, जेठानी,बुवा, माँ, सास, सहेली आदि विविध रिश्ते जीवन में सुचारू रूप से निभाती हैं | इन रिश्तों को सँभालते समय उसे कभी - कभी जुत्सजू करनी पड़ती हैं; कभी वह अजीब - सी कश्मकश में पड़ती है | लेकिन हर परिस्थिति में बहुत सावधानी के साथ अपने आपको ड़ालकर वह रिश्तों को बहुत अच्छी तरह से निभाती हैं | वर्तमान युग की नारी आधुनिक, प्रगतिवादी, स्वतंत्र विचारों का वहन करनेवाली है | हंस, वर्ष 2005 की प्रकाशित कहानियों की नगरों में रहनेवाली नारी पात्र पुरानें विचारों, परंपराओं का त्याग कर जीवन अपनी मर्जी के, अपनी कल्पना, विचारों के अनुसार जीती है | और जीवन का आनंद लेती हैं | इसके लिए वह उचित - अनूचित को महत्त्व नहीं देती | वह स्वार्थी भाव से सिर्फ अपने इरादों को फलित होते देखकर खुश होती हैं | वह कैरियर संपन्न हैं | आर्थिक संपन्न होने के कारण वह सामाजिक नीति - मूल्यों की बातों को महत्त्व नहीं देती |

हंस, जनवरी,2005 में प्रकाशित ' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित ' प्रेतकामना ' कहानी की अणिमा कैरियर संपन्न है | अपने गुरू ' डॉ.महेश्वरपंत ' के प्रति कॉलेज जीवन से ही अनुराग होने के कारण वह विवाह ही नहीं करती | बहुत वर्षों बाद जब वह अपने सर से मुलाकात करने आती है तो दोनों भावना में बहकर शरीर - संबंध रखते हैं | इस बात पर गलती का एहसास होकर 'डॉ.महेश्वरपंत' की जिंदगी में बवंड़र उठता है | लेकिन इस बात का बुरा असर ' अणिमा ' पर नहीं होता, वह उसे अनैतिक नहीं मानती | न ही इसे समाज के ड़र से छुपाती है | उल्टा वह ही अपने गुरू को यह बात समझाती हैं कि, इसमें कोई गलत बात नहीं | इस तरह ' अणिमा ' आधुनिक विचारों की नारी है |

' हंस ', नवंबर,2005 में प्रकाशित ' शैलेन्द्र सागर ' द्वारा लिखित ' प्रतिरोध ' कहानी की ' नंदिता ' नगरों की फ्लैट संस्कृति और विभक्त कुटूंब पद्धति के कारण अपनी अलग गृहस्थी बसाती हैं | उसका पति उसके साथ हमेशा शकी स्वभाव के कारण दुर्व्यवहार करता रहता है | लेकिन उनकी गृहस्थी ठीक कराने की बात उसके अलग रहनेवाले सास - ससुर नहीं समझते | वे उनसे कोई भाईचारा, अपनत्व का भाव न रखते हुए उनके रिश्ते को टूटने, बिखरने से बचाना अपना कर्तव्य नहीं समझते | अतः पति द्वारा पीड़ित होने पर ' नंदिता ' मायके आती है | मायकेवालों की निजी जिंदगी में स्वयं के कारण कोई रूकावट या खलल निर्माण न हो इसलिए वह अधिव्याख्याता की नौकरी करते हुए अपने बेटे के साथ अलग रहने लगती हैं | स्वाभिमान के साथ उसकी परवरिश करती है | बेटा बड़ा होता है तो प्रगतिवादी विचारोंवाली ' नंदिता ' विवाहेत्तर यौन संबंधों की ओर आकृष्ट होती है | जिसके कारण वह परेशान होकर भ्रमित, घुटन भरा जीवन महसूस करती है |

हंस, दिसंबर,2005 में प्रकाशित ' भालचन्द्र जोशी ' द्वारा लिखित ' लौटा तो भय ' कहानी की ' तारा ' समाज के नीति - मूल्यों को ठुकराकर अपने से निम्न जाति के, सरकारी उँचे ओहदे के पद पर कार्यरत अपने दोस्त ' जयंत ' के साथ घर से भाग जाकर विवाह करती हैं | इस अंतर्जातीय विवाह के कारण तारा के मायकेवालों को समाज, उनके जाति के लोगों द्वारा मान - हानि सहनी पड़ती है | यह बात ' तारा ' का भाई ' भुवन ' उसे बताता है तो वह अपने आधुनिक विचारों और खुशहाल गृहस्थी की बात के आगे समाज की मान्यता, अमान्यता को महत्त्व नहीं देती | दुनिया पैसों की सत्ता के आगे झुकती ही हैं | वह उनके विवाह का विरोध करेगी और थोड़े दिनों बाद यह बात भूल जाएगी

क्योंकि नगरीय जीवन में दूसरों की जिंदगी में झाँकने के लिए इन लोगों के पास समय की कमी है; इस बात का तारा को पूर्ण विश्वास है | इस तरह ' तारा ' अपने निर्णय पर खुश हैं |

हंस, मई,2005 में प्रकाशित ' नमिता सिंह ' द्‌वारा ' लिखित ' घर चलते हैं डार्लिंग ' कहानी की 'नीरजा ' अधेड़ उम्र की है | उसका अमरीका में रहनेवाला इकलौता बेटा हफ्ते में एक दिन अपने काम एवं आपा - धापी से समय निकालकर अपनी नगर में रहनेवाली प्राध्यापिका ' माँ ' से फोन पर बातें करता है | एक दिन वह किसी कारण वश ' नाँ ' से फोन पर बात नहीं कर पाता | तो ' नीरजा ' सोचने लगती हैं, बेटे को अच्छी शिक्षा देने के उपरांत वह अच्छे भविष्य के लिए विदेश में जाता है | लेकिन इस उद्‌देश्य में अपने पोतों के साथ वृद्‌धावस्था में खेलने, रहने, उन्हें बड़ा होते देखने का स्वप्न खो जाता है | इस तरह नगरों में कैरियर एवं कामयाब जीवन जीनेवाली माँ और दादी के रिश्ते की कश्मकश में बैठी ' नीरजा ' का चित्रण विवेच्य कहानी में परिलक्षित हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में नागरी नारी जीवन दृष्टिगोचर होता हैं |

3.2.3 **<u>महानगरीय जीवन</u>** :-

नगरों में रहनेवालों की आबादी दिन - ब - दिन बढ़ती रहती हैं | इससे नगरों का क्षेत्र बढ़ता रहता है और कुछ दिनों बाद बड़े क्षेत्र वाला, बड़ी आबादी वाला नगर ' महानगर ' का रूप ग्रहण करता हैं | महानगरों में स्वयं के कामों में व्यस्त रहने, जीवन की आपा - धापी, भागदौड़ के कारण लोग संकुचित वृत्ति के बनते हैं | उनमें स्वार्थांधता, मशिन की तरह काम करने की प्रवृत्ति, भाईचारे, अपनत्त्व का अभाव दिखाई देता हैं | वे अपने घरवालों से भी काम के कारण वार्तालाप नहीं कर पाते | फ्लैट में वे किसी पिंजरे की तरह रहते हैं | यहाँ रहनेवाले बूढ़े लोगों का जीवन तो बहुत ही दयनीय होता हैं | वृद्‌धावस्था में उनका जीवन व्याधियों से पीड़ित होता ही हैं तथा महानगरों का प्रदूषण भी इनका जीना बेहाल कर देता हैं |

हंस,2005 की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन निम्नलिखित हैं -

1. **पारिवारिक जीवन** :-

व्यक्ति विकास में परिवार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है | परिवार में भाईचारा बढ़ना, सद्‌गुणों का विकास होना, अपनत्त्व का भाव निर्माण होना, सुख - दु:ख में शामिल होना, व्यक्ति के परिवार के प्रति कौनसे कर्तव्य होते हैं तथा उनका उचित मार्ग से निर्वाह कैसे किया जाता है, रिश्तों की जिंदगी में क्या अहमियत है आदि विविध बातों का व्यावहारिक ज्ञान व्यक्ति अर्जित करता है | महानगरों में तो विभक्त परिवार होते हैं | अत: परिवार में दो पीढ़ियाँ ही अधिक मात्रा में दिखाई देती हैं | इन पीढ़ियों के विकास में परिवार का अनमोल योगदान होता है |पारिवारिक जीवन के संदर्भ में ' उषा मंत्री ' ने लिखा है, " परिवार इसीलिए भी महत्त्वपूर्ण हैं कि एक ओर जहाँ उसमें थकी हुई पीढ़ी आश्रय पाती है, वही वह भावी पीढ़ी का निर्माण भी करती है | परिवार में ही भूत, वर्तमान और भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है |"[4] अत: कहा जा सकता है परिवार में एक साथ रहने के साथ ही व्यक्तितत्त्व का विकास भी होता हैं |

' हंस ' अक्तूबर,2005 में प्रकाशित ' अल्पना मिश्र ' द्‌वारा लिखित ' बेतरतीब ' कहानी में माता - पिता, उनकी तीन बेटियाँ और एक बेटा यह परिवार चित्रित हैं | माता - पिता द्‌वारा की गई परवरिश से बच्चे समझते हैं; दुनिया कैसी है, पढ़ाई को जीवन में बहुत महत्त्व प्राप्त हैं, इसी के ही द्‌वारा आर्थिक आत्मनिर्भरता पाने के लिए नौकरी मिलती है | प्रस्तुत परिवार में अभिभावकों द्‌वारा बेटा - बेटी में फर्क किया जाता है | अपने माँ - बाप के जीवन द्‌वारा बेटियाँ ये भी देखती हैं कि, लिंगभेद करनेवाले पुरूष अपनी पत्नी को और अपनी बेटियों को कभी खुश नहीं रख पाते; अत: विवाह न करना ही उचित निर्णय हैं; ये बातें समझती हैं | इस परिवार में अभिभावक बूढ़े होते हैं, तो बेटियाँ नौकरी के कारण उनसे दूर रहती हैं; तो बेटा पढ़ाई के लिए दूर महानगर भेजा गया है | लेकिन परिवार के ही कारण बेटियाँ नौकरी करते हुए अपने निर्णय स्वयं लेने का इरादा करती हैं, जीवन के लक्ष्य को पाती हैं | अत: उनका व्यक्तितत्त्व विकास होता है |

इस तरह परिवार में बुढ़ापे में एक पीढ़ी परिवार में आश्रय पाती है साथ ही भावी पीढ़ी शिक्षा एवं नौकरी के द्‌वारा अपना विकास करती है, इन यथार्थ बातों का चित्रण विवेच्य कहानी में दिखाई देता है | इस तरह विवेच्य कहानी में पारिवारिक जीवन को प्रतिपादित किया है |

2. <u>वृद्ध जीवन का अभिशाप : व्याधीग्रस्त जीवन</u> :-

व्यक्ति के जीवन विकास के पायदान बचपन, किशोरावस्था, यौवनावस्था और वृद्धावस्था हैं | हर स्थिति में व्यक्ति की क्रिया - प्रतिक्रियाओं में अंतर दिखाई देता है | बचपन में माँ - बाप बच्चों का खयाल रखते हैं, किशोरावस्था में बच्चों में शारीरिक, मानसिक बदलाव के साथ वैचारिक प्रगल्भता आने लगती हैं | अनुभव के साथ यौवनावस्था में व्यक्ति अपना कैरियर, परिवार बनाता हैं | बच्चों की जिंदगी सँवरते - सँवरते वृद्धावस्था आती है | उपर विवेचित पायदानों में सबसे दयनीय अवस्था वृद्धावस्था है | यह जीवन की अंतिम कड़ी है; जब अपनों के सहारे, प्रेम की जरूरत हर व्यक्ति को महसूस होती हैं | इस समय शरीर दुर्बल होने लगता है अत: व्यक्ति का जीवन व्याधियों से पीड़ित होता है | महानगरों में अपनत्त्व के अभाव के कारण इनकी स्थिति दयनीय होती हैं |

' हंस ' दिसंबर,2005 में प्रकाशित ' कविता ' द्वारा लिखित ' उलटबांसी ' कहानी में अपूर्वा की माँ का वृद्ध जीवन चित्रित है | उसके बेटे महानगर में ही नौकरी के कारण अपने - अपने परिवार के साथ अलग - अलग जगहों पर रहते हैं | उनके पिता की मृत्यु होने के उपरांत उनकी माँ अकेली हो जाती है, तब भी माँ को अब हमारी जरूरत है, यह बात बेटों के मन को छूती तक नहीं | वृद्धावस्था में माँ को मोतियाबिंद होता है अत: वह अब स्वयं खाना भी नहीं बना सकती | पड़ोसी लोगों से मिन्नतें करके उनसे उसे खाना बनाकर लेने की नौबत आती है | उसे बुढ़ापे में एक हमसफर का साथ मिलता है तो वह अपने कष्टों का निवारण न सही पर साथी का साथ पाकर जीवन सुख से बीतेगा इस आशा से दूसरा विवाह करती है |

' हंस ', जनवरी,2005 में प्रकाशित ' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित ' प्रेतकामना ' कहानी के ' डॉ.महेश्वरपंत ' वृद्धावस्था में अपनों के साथ से वंचित होते हैं | उनका इकलौता बेटा ' सलिल ' अपनी पत्नी की बातों में आकर उसी महानगर में अलग जगह लेकर रहने लगता है | इस बात का सद्मा सहन न होने से उसकी माँ की मृत्यु होती हैं | वृद्धावस्था में ' डॉ.महेश्वरपंत ' को अपने फ्लैट में अकेले जीवन जीना पड़ता है | जहाँ कोई अपना नहीं | अत: अकेलेपन की व्याधी से त्रस्त, परिवार विहीन ' महेश्वरपंत ' जीवन से निराश होते हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में वृद्धावस्था की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है |

3. **पुरूषों का वेश्या जीवन** :-

पैसों के बदले अवैध शरीर संबंध रखना ' वेश्या जीवन ' है | ' वेश्या ' के संदर्भ में ' डॉ.रामनाथ शर्मा ' ने लिखा है, " एक व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) जो किसी प्रकार के नवीन (आर्थिक या अन्य प्रकार के) अथवा किसी अन्य प्रकार के निजी संतोष के लिए और एक अल्प समय या पूर्ण समय के व्यवसाय के रूप में समलिंगीय अथवा भिन्नलिंगीय विभिन्न व्यक्तियों से सामान्य अथवा असामान्य यौन सहवास स्थापित करता है, वह ' वेश्या ' है |" [5] अर्थात् व्यक्ति के रूप में स्त्री या पुरूष आर्थिक प्राप्ति या स्वयं को यौन संबंध की तृप्ति पाने के लिए ' यौन संबंध ' अपनाता है, उसे ' वेश्या ' कहते हैं | वेश्या यह समाज का कलंक है | इस जीवन की ओर ' हंस ' के कहानीकार गंभीरता के साथ देखते हैं | वेश्या जीवन का प्रचलन महानगरों में अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता हैं |

' हंस ', नवंबर,2005 में प्रकाशित ' अजय नावरिया ' द्वारा लिखित ' चीख ' कहानी का नायक मजबूरी के कारण वेश्या जीवन को स्वीकार करता है | वह ' मातंग ' इस दलित जाति का छात्र है, जो मिशनरी स्कूल के सहयोग से मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त करता है | लेकिन आगे की पढ़ाई के लिए उसे पैसों का इंतजाम स्वयं करना पड़ता है | वह महानगर में पहले तो टयूशन लेना, पार्लर में काम करना आदि छोटे - छोटे कामों से पढ़ाई के लिए पैसों का इंतजाम करता रहता है, फिर भी उसे पढ़ाई के लिए पर्याप्त पैसे नहीं मिलते | अतः आर्थिक मजबूरी के कारण उच्च वर्ग के एक डान्स मास्टर के अनुनय करने पर वह समलिंगीय यौन सहवास स्थापित करता है | इससे अधिक पैसे मिलने पर उसके मन में पैसों का लालच निर्माण होता हैं | और वह पढ़ाई को अनदेखा करके वेश्या जीवन को स्वीकारता है | उसे एक उच्च वर्ग की स्त्री ' मिसेज देशमुख ' वेतन देकर यौन संबंध रखने के लिए अपने पास रखती है | इसके बाद वह वहीं रहकर उच्च वर्ग की स्त्रियों के साथ यौन संबंध रखता है |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में महानगरों में चित्रित ' पुरूष वेश्या जीवन ' मार्मिकता से दर्शाया है |

4. **अंध लोगों का जीवन** :-

विकलांगों में अधिक मात्रा में अंध लोगों की संख्या दिखाई देती हैं | दृष्टि न होने से ऐसे व्यक्तियों को स्पर्श के द्‌वारा और दूसरों द्‌वारा बातें बताने पर एहसास से ज्ञान होता है | महानगरों में अंध लोग जागृत हो गए हैं अत: दृष्टिहीन बच्चों को दृष्टिहीन बच्चों के स्कूल में दाखिला किया जाता है | जहाँ उन्हें 'ब्रेल लिपि ' द्‌वारा आम लोगों की तरह लिखना, पढ़ना आता है | जिससे दृष्टि न होने की कमजोरी से भी यह लोग अपना जीवन सुचारू रूप से जीने में समर्थ बनते हैं |

' हंस ' मार्च,2005 में प्रकाशित ' जितेन्द्र भगत ' द्‌वारा लिखित ' दृष्टि ' कहानी में यह दर्शाया गया है, दृष्टिहीन अम्लान बी.एड. के पेपर की तैयारी कर रहा है | अर्थात् दृष्टिहीन होते हुए भी ' अम्लान ' ने अपनी कमजोरी पर विजय हासिल करके स्नातक तक की शिक्षा ग्रहण कर रहा है | अम्लान को रीड़िंग और राइटिंग के लिए दूसरे व्यक्ति की जरूरत है तो वह ' डूवा ' आता है जिसे उसे सहायता मिलेगी | अर्थात् दृष्टिहीन लोगों की सुविधा के लिए सरकार द्‌वारा BRA - Blind Relief Association आदि विविध योजनाओं का लाभ उपलब्ध किया जाता है | समाज के कुछ लोग इनकी सहायता करते हैं तो कुछ लोग इनकी ओर उपेक्षा से देखते हुए इन्हें प्रताड़ित या अपमानित करते रहते हैं | विवेच्य कहानी में यह भी दर्शाया है कि, दृष्टिहीन लोग अपना संघ बनाकर नौकरी में उन्हें आरक्षण प्राप्त हो इसलिए वे कोशिश करते हैं |

' हंस ', अक्तूबर,2005 में प्रकाशित ' हरिश्चंद्र बर्णवाल ' द्‌वारा लिखित ' यही मुंबई है ' कहानी में ' महादेव ' अंधा बच्चा है | वह संवेदनशील है | अपनी माँ को स्वयं की शुश्रूषा करते समय होनेवाली परेशानी को महसूस करके वह दु:खित होता है | वह अपनी मैड़म से सवाल पूछकर कई बातों की जानकारी लेता है | जैसे गुफ़ा कैसी होतीं है, किरण क्या चीज है आदि | उसकी रेल की बोगी में माँ द्‌वारा दी गई नोट कहीं गुम होती है तो वह अनुमान लगाता है किसी गुंड़े ने उसकी नोट चुराई होगी |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में महानगरों में रहनेवाले अंध लोगों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया हैं |

5. **प्रेमविषयक कहानियाँ** :-

प्रेम के बिना जीवन की कल्पना वैसे ही असंभव है, जैसे जल के बिना मछली की | प्रेम के ही कारण व्यक्ति का जीवन रंगीन, खुशी से भरा निर्माण होता है | प्रेम के कारण दुर्गुणी व्यक्ति में भी सुगुणों का संचार हो सकता है | अर्थात् प्रेम में सबको अच्छा बनाने की ताकद है |

' हंस ' , मार्च,2005 में प्रकाशित ' राजीव सिंह ' द्वारा लिखित ' त्रिकोण 'कहानी का नायक प्रेम में अपनों द्वारा, अपनी प्रेमिका द्वारा धोखा खाने पर दु:खी होता है | दु:खी होने के साथ ही वह दुनिया का भी विश्वास ' प्रेम ' इस शब्द से उठे इसलिए अनेक व्यक्तियों को धोखा देता रहता है | लेकिन दुराचारी बने नायक को वह जिस अनाथ बच्चों की संस्था में काम करता है वहाँ की अनाथ बच्ची नायक के मन में पिता का प्रेम जगाती है | जिससे नायक यह विचार करने पर मजबूर होता है कि, दुनिया में कुछ लोग अच्छे होते हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में प्रेम व्यक्ति को बुरा भी बना सकता है और अच्छा भी इसलिए व्यक्ति की नियत ठीक हो यह प्रतिपादित किया गया है |

' हंस ' मई, 2005 में प्रकाशित ' प्रियंवद ', द्वारा लिखित ' दावा ' कहानी का नायक सच्चे प्रेमी के रुप में चित्रित है | जो कॉलेज जीवन की प्रेमिका का विवाह अन्य व्यक्ति के साथ होने के पश्चात् भी आजीवन उसके प्रेम की यादों के साथ जीवन बिताता है | वह विवाह ही नहीं करता |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में प्रेम में फँसने या धोखा खाने के कारण व्यक्ति दुराचारी बनती है और सच्चा प्रेमी आजीवन प्रेमी की यादों के साथ जीवन खुशी से बीता सकता है, इन दो विरोधी पक्षों का चित्रण किया हैं |

3.2.4 **विदेशी समाज जीवन** :-

विदेशी जीवन के अंतर्गत विदेश में चित्रित सामाजिक विषय पर आधारित कहानी का समावेश होता है | ' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' में प्रकाशित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में सिर्फ भारतीय समाज जीवन का चित्रण किया है ऐसी बात नहीं | उन्होंने कुछ कहानियों में विदेशी समाज जीवन का भी चित्रण किया है |

' हंस ', जून 2005 में प्रकाशित ' अर्चना पैन्यूली ' द्‌वारा लिखित ' अनुजा ' कहानी 'डेनमार्क' में चित्रित है | प्रस्तुत कहानी में भारतीय लोगों का विदेश नौकरी के कारण परिवार समेत रहना, विदेश में रहनेवाले व्यक्ति से विवाह किया जाने पर विदेश में गृहस्थी बसाना, वहाँ के वातावरण में घुल - मिल जाना इसका समावेश हैं | प्रस्तुत कहानी की नायिका अनुजा का पति परदेस में स्थायी आवास का परमिट देने का गैरकानूनी व्यवसाय करता है | इस गैरकानूनी तरीके से मिलनेवाले पैसों से वह अपना घर चलाता है | अनुजा के पति की अचानक मौत होती है जिसका फायदा उनकी ग्राहक ' सपना ' लेकर उसकी दौलत जायदाद हड़प लेती है | इस प्रकार ' अनुजा ' के साथ नियती क्रूर खेल खेलती है | अर्थात् पति के गैरकानूनी कामों में साथ देनेवाली ' अनुजा ' को भी समाज द्‌वारा ही सजा मिलती है | जिससे वह आईंदा अपने जीवन में गैरकानूनी काम न करने की बात पर अड़िग रहती है |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में विदेशी समाज जीवन से संबंधित पहलुओं का चित्रण परिलक्षित होता है |

3.3 धार्मिक विषयों से संबंधित कहानियाँ :-

' धर्म ' व्यक्ति का अभिमान है | धर्म में अनेक पंथ, संप्रदाय, विचार प्रवाह, मजहब, नैतिक व्यवस्था का भी समावेश होता है | धर्म पर मानव की असीम श्रद्‌धा एवं विश्वास होता है | धर्म के ही कारण मानव समाज में एकता प्रस्थापित होती है | भारतीय समाज के लोग धर्म को अपने प्राणों से भी अधिक महत्त्व देते हुए नज़र आते हैं | लेकिन कुछ स्वार्थी लोग समाज मन को परख़ते हुए धर्म पर ही धावा बोल देते हैं, लोगों के मन में ड़र निर्माण करने की कोशिश करते हैं | भक्ति के नाम पर स्वार्थी वृत्ति को दर्शाते हुए पाखंड़ी बनते हैं | लोगों के मन में आतंक निर्माण करते हैं | इस तरह धर्म जैसा पवित्र क्षेत्र भ्रष्ट हो रहा हैं | फिर भी कुछ धर्मप्रवण लोगों के कारण फिर से शांति और पावित्र्य का वातावरण धर्म क्षेत्रों में निर्माण किया जाता है |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में धार्मिक विषयों से संबंधित कहानियों का समावेश है | वे निम्नलिखित प्रकार से उद्‌धृत हैं |

1. **मजहब एवं संप्रदाय के कारण निर्मित आतंक प्रभावित जीवन** :-

धर्म को प्राण के समान महत्ता प्रतिपादित करनेवाले लोग मजहब, संप्रदाय या जाति के कारण विवाद या दंगा छिड़ने पर मानवता को भुलाकर अनैतिक आचरण करते हैं | जिससे लोगों के मन में आतंक समा जाता है और इसके बुरे परिणाम निकलते हैं |

' हंस ', मार्च, 2005 में प्रकाशित ' विजय ' द्वारा लिखित ' खैरियत है ' कहानी में मजहब के कारण दंगा निर्माण होता है | इसमें लोग बेरहमों की तरह औरतों की इज्जत लूटते हैं,बूढ़ों पर अत्याचार करते हैं, बच्चों पर भी जुल्म ढ़ाते हैं | लोगों के मकानों को राख में तब्दील करते हैं | पूरे शहर में आतंक का हिंसा का वातावरण छाया रहता है | लोग मजहब एवं जातिभेद के कारण एक - दूसरे के खून के प्यासे होते हैं | इस तरह पूरे शहर में आतंक फैलता है | लेकिन मीड़िया के लोग परिस्थिति की गंभीरता को न समझते हुए सिर्फ खबरें बटोरते हैं, लाशों की गिनती करते रहते हैं | इस कारण मजहब के कारण निर्मित दंगे का भय समाज मन को थर्राता है; इसका यथार्थ चित्रण विवेच्य कहानी में किया है |

2. **मठों का विकृत रुप** :-

मठों में भगवान की उपासना करने के उद्देश्य से भक्त आते रहते हैं | वर्तमान युग में कुछ मठाधिपति भगवान के नाम पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए समाज विघातक कृत्यों को अंजाम देने की ओर आकृष्ट होते हुए दिखाई देते हैं | ऐसे व्यक्ति विलासिता के साथ हर चीज का उपभोग लेते हुए प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं | जिसके कारण मठों का विकृत रुप समाज को दिखाई देता है |

' हंस ', अक्तूबर, 2005 में प्रकाशित ' मनोज कौशिक ' द्वारा लिखित ' कुण्ड़लिनी ' कहानी में मठों में उभरते विकृत रुप को दर्शाया गया है | प्रस्तुत कहानी में ' नित्यानंद ' स्वामी के सानिध्य में साधक भगवान की कृपा पाने के लिए ध्यान धारणा करते हैं | मठ में सेवा करते हैं | महंथ नित्यानंद महाशिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं, जिसमें जनकल्याण और ईशचिंतन की भावना ओत - प्रोत है | लेकिन मठ में रहनेवाला साधक धर्मभ्रष्ट करते हुए नित्यानंद जी को मार ड़ालता है और अपने गुनाहों पर पर्दा ड़ालने के लिए उनकी प्रतिमा की मठ में स्थापना करके स्वयं परमशिष्य बनने का सम्मान

हासिल करता है | नित्यानंद के रहते हुए मठों में साधकों की साधना में अवरोध उत्पन्न होगा इसलिए स्त्रियों की नियुक्ति नहीं की गई थी | लेकिन परमशिष्य पद प्राप्त सदानंद ने रसोई की आड़ में भोग विलासिता के लिए मठों में स्त्रियों की नियुक्ति की | इस तरह वासना का उन्माद मठ में तांड़व करने लगा |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में मठों का विकृत रुप दिखाई देता है |

3. **भक्ति का एक रुप स्वार्थ** :-

स्वार्थ हर व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में होता ही है | इस स्वार्थांधता के कारण व्यक्ति जाने - अनजाने में दूसरों का अहित करता है | मानव की इस स्वार्थी वृत्ति ने धर्म के क्षेत्र में भी अपने पाँव फैलाना शुरु कर दिया है | अतः हर व्यक्ति को अपने जीवन में सावधानी से निर्णय लेने चाहिए | दूसरों को अपने जीवन में दखलअंदाजी देने का हक् नहीं देना चाहिए |

' हंस ', दिसंबर, 2005 में प्रकाशित ' हर्षदेव ' द्वारा लिखित ' ओम नमो शिवायः ' कहानी के नायक ' पुरचुरे ' की भगवान शिव पर श्रद्धा है | वे हररोज सुबह शिव की पिंड़ी के सामने बैठकर पूजा - पाठ, अभिषेक करते हैं | तो उनके कॉलोनी के लोग श्रद्धा वश पूजा घर की खिड़की की जगह दरवाजा करने की बात ' पुरचुरे ' को बताते हैं, जिससे वे ठीक तरह से पिंड़ी के दर्शन की लाभ की इच्छा को पूर्ण होने की कामना से उद्वेलित हो उठते हैं | पुरचुरे सोचते हैं, यह धर्म का पुण्य का काम है | पर इसी के साथ उनका सुख, चैन हराम होता है | कॉलोनी के लोगों की दर्शन के लिए भीड़ होने लगती है | अतः शोर के कारण उनका पारिवारिक जीवन बिखरता है | इस तरह भक्ति सिर्फ स्वयं की खुशी के लिए होती है, यह बात भुलकर ' पुरचुरे ' कॉलोनी के लोगों को पिंड़ी के दर्शन कराने की अनुमति देते हैं | इस बात का फायदा उठाते हुए कॉलोनी के स्वार्थी लोग उस पर अपना अधिकार जमाते हैं | जिससे ' पुरचुरे ' को पुण्य का काम करने पर भी अपनी भक्ति का उचित फल नहीं मिलता | भक्ति का यह स्वार्थी रुप देखकर वह हैरान और दुःखी होते हैं |

4 **धार्मिक आडंबरों का पर्दाफाश** :-

वर्षो से चली आ रही परंपरा को ' रुढ़ि ' कहा जाता है | आज भी इन रुढ़ियों की पकड़ समाज में व्याप्त है | संस्कारशील समाज मनों पर रुढ़ियों की पकड़ मजबूत दिखाई देती हैं | इनमें से पशुहत्या जैसी कुछ रुढ़ियाँ धार्मिक आडंबर को दर्शाती हैं | अत: शिक्षित समाज इन रुढ़ियों को मानता नहीं | जो रुढ़ियाँ असंगत लगती हैं, वह उनका विरोध करता है | जिसका कारण विज्ञान पर आधारित दृष्टिकोण है |

' हंस ', मार्च,2005 में प्रकाशित ' राजेन्द्र सिन्हा ' द्वारा लिखित ' भेड़ियाधसान ' कहानी के उच्च शिक्षित दांपत्य ' समीर ' व 'सुभद्रा ' भगवान की कृपा से औलाद होगी इस आशा से बैद्यनाथधाम की यात्रा करने आते हैं | वहाँ परंपरा के अनुसार गंगास्नान कर गंगा जल का आचमन किया जाता है | भीड़ और यात्रियों के स्नान करने के कारण गंगा का पानी अशुद्ध होता है, उसे वह पानी पीना अच्छा नहीं लगता | लेकिन समीर उसे समझाता है, यह गंगा है इसका पानी पवित्र होता है | यह बात सुनकर उसे वह पानी पीना पड़ता है | सुभद्रा यह बातें समीर के प्रेम के खातिर करती है, तो समीर संस्कारों से बद्ध होने के कारण इन रुढ़ियों को मानता है | उसे संतान प्राप्ति के लिए इन रुढ़ियों का पालन करना अच्छा लगता है | रुढ़ि के अनुसार प्रस्तुत कहानी में यह बताया है कि, दुर्गा के सामने 21 नरबच्चों के भैंसों की बलि देकर वह प्रसाद पुत्रकामना करनेवालों को दिया जाता है | इससे समीर पशुहत्या की बात रुढ़ि के तहत् मानने को तैयार नहीं होता |

इस प्रकार विवेच्य कहानी में रुढ़ि के तहत् श्रद्धावश मैली गंगा का दूषित पानी पीना, पशुहत्या इन धार्मिक आडंबरों का विरोध दर्शाकर उनका पर्दाफाश किया है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में धर्म के कारण निर्मित आतंक, भक्ति का स्वार्थी रुप, मठों का विकृत रुप, धार्मिक आडंबरों का पर्दाफाश इन बातों का चित्रण किया है |

3.4 **मनोवैज्ञानिक कहानियाँ** :-

मन का अभ्यास करनेवाले शास्त्र को ' मनोविज्ञान ' कहा जाता है | इस संदर्भ में ' डॉ. देवराज उपाध्याय ' ने लिखा है, " मानव के प्रति मानव की चिंता को समझने - समझाने, देखने, बूझने

के प्रयत्न को मनोविज्ञान का अध्ययन कहते हैं | "[6] अर्थात् मानव के मन में चिंता क्यों निर्माण हुई उसे समझकर उस पर उपाय ढूँढ़ने का अध्ययन मनोविज्ञान में किया जाता है | मनोवैज्ञानिक कहानियों में मानव मन का संघर्ष चित्रित किया जाता है | इसमें मनोवैज्ञानिक पात्र द्वारा मन की गुत्थियों को अर्थात् अतृप्त इच्छाएँ, दमित वासनाएँ, मानसिक विकृतियों को दर्शाया जाता है |

' वर्ष 2005 ' ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कुछ कहानियों में मनोवैज्ञानिक कहानियों का अंतर्भाव हैं | उनमें मनोविज्ञान से संबंधित निम्नलिखित पहलु चित्रित हुए है |

1. **मानसिक विकृति से प्रभावित जीवन** :-

मानसिक विकृति से व्यक्ति अपनी दमित वासनाओं, अतृप्त इच्छाओं को मन में दबाता है | उसे समाज के सामने जाहिर नहीं होने देते | अतः कुछ समय पश्चात् मन अपनी इन आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए विवश होता है और व्यक्ति अनजाने में ही इन मानसिक विकृतियों का शिकार होती हैं |

' हंस ', फरवरी, 2005 में प्रकाशित ' लवलीन ' द्वारा लिखित ' एक लड़की की मौत ' कहानी की लड़की अपनी इच्छाओं को घरवालों से बताने में हिचकती है अतः वह अपनी इन इच्छाओं को स्वप्न के द्वारा पूरी होते हुए देखकर संतोष पाती रहती है | लेकिन घरवालों से विरोध होने पर उसे यह बात समझ में आती है कि, सपनों द्वारा जीवन जीना, इच्छाएँ सफल होते देखना मानसिक विकृति है | इस संदर्भ में ' लवलीन ' ने लिखा है, " यह विचित्र दुनिया थी, अगम अछोर दुनिया की विचित्र अनुभूतियों का संसार था. मन के अवचेतन का खेला था. उसका दिल - दिमाग, उसकी छुपी आशाओं - आकांक्षाओं, स्मृतियों का संग्रहालय बन गया था | " [7] इस तरह लड़की दिवास्वप्नों में पूरी तरह जकड़ गई थी | लड़की सपनों द्वारा आशाओं को फलित होते हुए देखने की मानसिक विकृति से ग्रस्त हो गई थी |

' हंस ', जुलाई, 2005 में प्रकाशित ' मुशर्रफ आलम जौकी ' द्वारा लिखित ' ड्रैकुला ' कहानी की सोफिया का विवाह तय नहीं हो पा रहा है | विवाह की उम्र बीत रही है | वह अपने भाई, जीजा -जीजी के लिए परेशानी का विषय बन रही है यह बात सह नहीं पाती, अत; ' भ्रम ' इस

मानसिक विकृति का शिकार बनती है | उसे भ्रम होता है आसेबी दास्तानों का प्रसिद्ध पात्र ' ड्रैकुला ' उसे जख़्मी करता है | यह उसका भ्रम है, जो उसे अकेले रहने को विवश करता है | ' ड्रैकुला ' का चित्रण करते हुए ' मुशर्रफ ' जी ने लिखा है," होंठ इंसानी खून से तर, दांत लंबे, बड़े और सुर्ख - वह अपने ' कोफन ' से बाहर आया था. किसी स्पायड़रमैन की तरह ' ड्रैकुला ' सोफिया की ओर देख रहा था. "[8] इस प्रकार ' ड्रैकुला ' सोफिया के कमरे में आता है, यह दर्शाया है | सोफिया का यह भ्रम जब वह आत्मविश्वासी लड़की बनती है तब दूर होता है |

इस तरह प्रस्तुत कहानी की मनोवैज्ञानिक पात्र निराश है, जो अंततः भ्रम इस मानसिक विकृति का त्याग करने के उपरांत साधारण जीवन जीने लगती है |

नवंबर, वर्ष 2005 ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' रश्मी वी. आर. ' द्वारा लिखित ' लाशें ' कहानी का नायक ' फंतासी ' इस जटिल मानसिक प्रक्रिया का शिकार होता है | ' फंतासी ' के संदर्भ में ' हरिकृष्ण देवसरे ' लिखते हैं, " यह कल्पना की वह प्रक्रिया है जो किसी अमूर्त वस्तु की क्रिया स्थिति, रुप तथा आकार का बोध कराती है | यह जटिल मानसिक प्रक्रिया, जिसमें मानसिक उड़ानें आती है और मनुष्य काल्पनिक जगत् का निर्माण करता है |"[9] अर्थात् मनुष्य द्वारा कल्पना के सहारे किसी अदृश्य वस्तु को दृश्य बनाकर अपनी इच्छा को अतिकल्पना द्वारा फलित होते हुए देखना, फंतासी कहलाता है | प्रस्तुत कहानी का नायक वेश्या की लाश को कल्पना के सहारे दृष्टव्य महसूस करता है | उससे प्रेम के कुछ पल बिताता है | ये उसकी कल्पना जगत् की मानसिक उड़ानें हैं, जिससे वह पत्नी द्वारा न मिले प्रेम की पूर्ति करता है | अतृप्त इच्छा को पूर्ण करने के लिए नायक अतिकल्पना करने की मानसिक विकृति के शिकंजे में फँसता है |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में दिवास्वप्न, भ्रम, फंतासी इन मानसिक जटिल विकृतियों का चित्रण किया है |

3.5 **<u>ऐतिहासिक कहानी</u>** :-

ऐतिहासिक कहानियों में इतिहास का दर्शन कराने के लिए कल्पना का सहारा लिया जाता है | इससे ऐतिहासिक कहानियों की प्रभावोत्पादकता बढ़ती है |

' हंस ', जुलाई 2005 में प्रकाशित ' रत्नेश्वर ' द्वारा लिखित ' लेफ्टिनंट हॉडसन ' कहानी का नायक ऐतिहासिक पात्र ' लेफ्टिनंट हॉड़सन ' है | प्रस्तुत कहानी का शीर्षक भी इसी के नाम से अभिहित किया गया है | जिससे ऐतिहासिक कहानी की पहचान होती है | ' इतिहास ' के संदर्भ दर्शाते हुए ' रत्नेश्वर ' ने लिखा है, " मुखौटे सम्राट ' बहादुरशहा जफर ' को गिरफ्तार कर लिया. लेफ्टिनंट हॉड़सन ने दिल्ली के निवासियों, विद्रोही सैनिकों और मजदूरों से प्रतिशोध लिया | " [10] इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा मजदूरों पर हुए अन्याय के बारे में कहानी बताती है | प्रस्तुत कहानी की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए कल्पना का वातावरण निर्माण किया गया है | इसमें मजदूरों के कंकालों का संबंध इतिहास के अत्याचारित मजदूरों के साथ जोड़ा गया है | जो कल्पना पर ही आधारित है | इस तरह प्रस्तुत कहानी ऐतिहासिक कहानी है |

3.6 **आर्थिक जीवन से संबंधित कहानियाँ** :-

' अर्थ ' जीवन की महत्त्वपूर्ण जरुरत है | इसीके आधार पर व्यक्ति अपनी विविध जरुरतों, उपभोग की वस्तुओं को पा सकता हैं | ' अर्थ ' या आर्थिक परिस्थिति जीवन के मायने ही बदल देती है | इसी के कारण गरीब व्यक्तियों की और अमीर व्यक्तियों की जीवन शैली में परिवर्तन, अंतर नज़र आता है | अतः कहा जा सकता है ' अर्थ ' पक्ष का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है | महँगाई के जमाने में तो यह व्यक्ति की पहली आवश्यक जरुरत बन गई है | इसी पक्ष से संबंधित कुछ कहानियाँ ' हंस ', वर्ष -2005 में प्रकाशित हुई हैं | वे निम्नलिखित प्रकार से हैं -

1. **गरीब का जीवन** :-

गरीब व्यक्ति के पास पर्याप्त पैसे नहीं होते अतः उन्हे अपनी रोजमर्रा की आम जरुरतों को पूरा करने के लिए बहुत जुत्सजू करनी पड़ती है | इसी कारण गरीब लोगों के जीवन में लाचारी की दयनीय स्थिति निर्माण होती है | गरीब परिवारों में कभी - कभी बच्चों को भी रुपए कमाने के लिए कुछ - न -कुछ मेहनत मजदूरी करनी पड़ती है | यह उनकी विवशता होती हैं |

' हंस ', अप्रैल, 2005 में प्रकाशित ' कांति देव ' द्वारा लिखित 'खजांची ' कहानी में बालक ' खजांची ' गरीब घर का बेटा है | उसके पिता काम करके दो वक्त की रोटी का किसी तरह इंतजाम

कर पाते हैं | ' खजांची ' की माँ भी काम करके गृहस्थी को सँवरने की कोशिश करती रहती हैं | लेकिन अचानक शहर में दंगा निर्माण होने के कारण ' खजांची ' के पिता 7-8 दिनों से घर नहीं आ सके है, उसकी माता की तबीयत भी ठीक नहीं है, अतः घर में अनाज का एक दाना भी नहीं हैं | शहर में दंगा खत्म होने के आसर दिखते ही सरकार द्वारा गरीबों को राशन प्रदान करने का काम शुरु होता है तब विवश होकर ' खजांची ' स्वयं ही राशन लेने दुकान पर आता है | वहाँ के लोग उसे राशन नहीं देते तो वह बड़े धैर्य के साथ बड़े साहब को अपनी गरीब हालात और घर में राशन लाने के लिए कोई बड़ा व्यक्ति नहीं आ सकता यह मजबूरी बताता है | वह गरीब है, खाना भी स्वयं ही पकाता है, उसकी माँ हमेशा बीमार रहती है, इन बातों को समझ कर बड़े साहब उसे राशन देने की अनुमति देते हैं |

इस तरह गरीब जीवन का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है |

2. **बेकार जीवन** :-

कोई भी व्यक्ति नौकरी पाकर जीवन आराम; सुख - चैन से व्यतीत करता है | अपने सपनों को पूरा करता है, वेतन द्वारा विविध सुखों का उपभोग करता है | लेकिन दुर्भाग्यवश किसी व्यक्ति को नौकरी नहीं मिली या नौकरी से निकाला गया तो वह निराश होने के साथ जीवन में विफल भी होता है | और यदि नौकरी से निकाला जाए तो व्यक्ति टूट सकता है | क्योंकि अर्थाभाव सम्मान नहीं बल्कि अवमान का जीवन प्रदान करता है |

' हंस ', अप्रैल, 2005 में प्रकाशित ' कुणाल सिंह ' द्वारा लिखित ' शोकगीत ' कहानी में नायक ' कुणाल ' को अचानक बिना किसी गलती के नौकरी से निकाल दिया जाता है | अतः बेकार होने से वह निराश होता है | यह बात वह अपने अभिभावकों और होनेवाली पत्नी को बता नहीं पाता | वह दूसरी नौकरी ढूँढ़ने के लिए साक्षात्कार देता रहता है पर उसमें कामयाब नहीं होता | नौकरी से निकालते समय प्राप्त वेतन व्यसन और ऐय्याशी में जल्दी ही खत्म हो जाता है | बेकारी के कारण फोन बील आदि के पैसे वह अदा नहीं कर पाता | उस पर दिनों दिन ऋण बढ़ता जाता है |

इस तरह बेकारी के कारण युवाओं की बनी दयनीय स्थिति, असुरक्षित भविष्य यह बातें विवेच्य कहानी में दृष्टव्य हैं |

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में अर्थाभाव के कारण निर्माण हुई जीवन की दयनीय, लाचार स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है |

निष्कर्ष :-

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों को विषय की कसौटी पर परखने के पश्चात् निष्कर्ष रुप में जो बातें सामने आती है, वे निम्नलिखित प्रस्तुत की गई हैं |

विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण करते समय वर्गीकरण के आधारों को दर्शाते हुए विषय के रुप में वर्गीकरण किया है | जिनमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, अर्थिक जीवन से संबंधित कहानियाँ दृष्टव्य होती हैं |

राजनीतिक से संबंधित कहानियों में नेताओं के गुण - दोष, उनका चरित्र -चित्रण आदि बातों पर प्रकाश ड़ाला गया हैं |

सामाजिक विषयों से संबंधित कहानियों में व्यक्ति की जीवनावस्थाओं का चित्रण किया हैं | इनमें छात्र जीवन, पारिवारिक जीवन, वृद्ध जीवन का यथार्थ चित्रण किया हैं | दृष्टिहीन जीवन व वेश्या जीवन इन अलग पहलुओं को भी विवेच्य कहानियें का विषय बनाया गया हैं | इस तरह ग्राम, नागर, महानगरीय, विदेशी समाज जीवन का चित्रण विवेच्य कहानियों में परिलक्षित होता है | विवेच्य कहानियों में भारतीय जीवन के साथ विदेशी समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करने में ' हंस ' के कहानीकारों को सफलता मिली है |

धार्मिक जीवन से संबंधित कहानियों में आतंक, स्वार्थी वृत्ति, पाखंड़ आदि पक्षों का चित्रण किया हैं |

मनोवैज्ञानिक कहानियों में अधिकतर मानसिक विकृति की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया गया हैं |

' अर्थ ' इस जीवन के बहुमूल्य पक्ष को लेकर गरीब एवं बेकार जीवन इनका मार्मिक चित्रण किया हैं |

इस तरह ऐतिहासिक कहानी का भी समावेश विवेच्य कहानियों में अलग एवं अनोखा प्रयास है|

अत: कहा जा सकता है ' हंस ' के विवेच्य कहानियों के प्रसिद्ध कहानीकारों ने समाज के दोषों को दिखाया है, जिससे समाज सुंदर और बलशाली बन सकेगा| ' हंस ' के कहानीकार समाज के सजग प्रहरी हैं|

संदर्भ

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य - शास्त्र - डॉ. देशराज सिंह भाटी - पृ.321-322
2. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता - डॉ. शशी जेकब - पृ.91
3. हंस, जून, 2005 - समरवंशी - सोहन शर्मा - पृ.26
4. हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ - उषा मंत्री - पृ.6
5. भारत में नगरीय समाजशास्त्र : वेश्यावृत्ति और यौन संबंध - डॉ.रामनाथ शर्मा - पृ.166
6. आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ.देवराज उपाध्याय - पृ.40
7. हंस, फरवरी,2005 - एक लड़की की मौत - लवलीन - पृ.27 व 28
8. हंस, जुलाई,2005 - ड्रैकुला - मुशर्रफ आलम जौकी - पृ.53
9. हिंदी बालसाहित्य : अध्ययन - हरिकृष्ण देवसरे - पृ.280-281
10. ' हंस ', जुलाई,2005 - लेफ्टिनंट हॉडसन - रत्नेश्वर - पृ.68

*****